कम समय में अधिक लाभ के लिए करें बेबी कॉर्न की खेती

विशाल त्यागी[1], मोना नगरगड़े[2], कल्याणी कुमारी[1] एवं गोपी किशन[1]
[1]भाकृअनुप– भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, मऊ, (उत्तर प्रदेश)
[2]भाकृअनुप– भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, (उत्तर प्रदेश)
*संवादी लेखक का ई–मेलः vish926@gmail.com

परिचयः

आज के समय में खेती किसानो के लिए घाटे का सोदा साबित हो रही है। किसानो को फसल की लागत के अनुसार मुनाफा नही मिल पा रहा है। इस कारण देश के अधिकतर किसानो की कृषि में रूचि लगातार घटती जा रही है। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन के अनुसार देश के लगभग 40 प्रतिशत किसान खेती को छोड़ना चाहते है तथा हमारे युवा खेती में रूचि नही ले रहे हैं। देश की जनसँख्या लगातार बढती जा रही है तथा आने वाले समय में प्रयाप्त खाद्दान आपूर्ति एक प्रमुख समस्या होगी, ऐसे में किसानो का खेती में कम रूचि लेना इस समस्या को और भी अधिक गंभीर बना देगा। इस समस्या से निदान पाने के लिए हमे ऐसी कृषि तकनीक कि आवश्यकता है जो किसानों की आमंदनी सुनिश्चित कर सके। बेबी कॉर्न की खेती इस सन्दर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है।

बेबी कॉर्न एक ऐसी फसल है जिससे किसान कम समय में अधिक मुनाफा ले सकतें है। इस समय इसकी मांग खासकर रेस्टोरेंट तथा होटलों में बहुत तेजी से बढ़ रही है। जिसके कारण इसकी बाजार में कीमत भी अधिक मिलती है। यह दोहरे उद्देश्य की फसल है जिसके बचे हुए भाग को जानवरों के चारे के रूप में उपयोग किया जाता है। और खास बात यह है की इसकी खेती वर्ष भर कर सकते है तथा यह मात्र 60 दिनों में तैयार हो जाती है।

बेबी कॉर्न क्या है ?

बेबी कॉर्न मक्का का एक अनिशेचित भुट्टा है जिसे सिल्क निकलने के 1–3 दिन के अन्दर पोधे से तोड़ लिया जाता है।

पोष्टिक महत्वः बेबी कॉर्न एक पोष्टिक आहार है जिसमे कोलेस्ट्रोल नही पाया जाता तथा अधिक मात्रा में कार्बोहाइड्रेट (3–3.5 प्रतिशत), रेशा (1.5–2 प्रतिशत) तथा प्रोटीन (2.5 प्रतिशत) पायी जाती है। इसमें प्रचुर मात्रा फॉस्फोरस, कैल्शियम तथा मैग्नीशियम भी पाया जाता है।

उपयोगः बेबी कॉर्न का प्रत्येक भाग उपयोग में आता है। इसके भुट्टे को कच्चा या उबालकर दोनों प्रकार से खाया जा सकता है। यह सलाद के रूप में, स्लाइस के रूप में, सूप के रूप में या चोप्स के रूप में खायी जाती है। बेबी कॉर्न को अन्य सब्जियों के साथ मिलाकर भी खाया जा सकता है। रसीलेपन, स्वादिष्टता तथा उच्च पाचनशक्ति के कारण यह एक आदर्श चारे की फसल है। इसको चारे के रूप में किसी भी अवस्था में खिलाया जा सकता है। इसका चारा दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने में बहुत उपयोगी है। सूखे पोधे, सुखी पत्तियां तथा छिलका इंधन के रूप में उपयोग किया जाता है।

फसल उत्पादन तकनीक

जलवायुः बेबी कॉर्न की खेती सभी मोसम में की जा सकती है। इसकी अच्छी पैदावार के लिए 600–1000 मिमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।

भूमि तथा खेत की तैयारीः इसकी खेती किसी भी प्रकार की भूमि में की जा सकती है। परन्तु वह भूमि जिसका पी. एच मान 5.5–7.0 हो सबसे उपयुक्त होती है। खेत का चयन करते समय यह ध्यान रखना बहुत आवश्यक है कि खेत में जलनिकास की उचित व्यवस्था हो।

पहली जुताई मिट्टी पलट हल से करने के बाद 2–3 जुताई कल्टीवेटर से करनी चाहिए तथा प्रत्येक जुताई के बाद पाटा लगाना चाहिए।

उपयुक्त प्रजातियाँ

वी एल 42, आर सी एम् 1–3, वी एल मक्का, गोल्डन बेबी, आलमंड

बेबी कॉर्न की प्रजातियों में निम्नलिखित गुण होने चाहिए

1. शीघ्र पकने वाली (55 दिन से कम)
2. कम से कम 3 भुट्टे प्रति पोधें हों
3. एक ही समय पर भुट्टा निकले जिससे तुड़ाई में आसानी रहे
4. पीले रंग के पंक्तिबद्ध दाने के रुप में

बीज उपचार: बीज जनित रोगों से बचाव के लिए बुवाई से पहले बीज शोधन अवश्य करना चाहिए। बीज शोधन के लिए बाविस्टिन या कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा प्रति किग्रा. बीज दर से प्रयोग करें।

बुवाई का समय: बेबी कॉर्न को दक्षिण भारत में वर्ष भर, उत्तरी भारत में फरवरी से अक्टूबर तक तथा पूर्वी भारत में इसे जनवरी से सितम्बर माह में उगाया जा सकता है।

बीज की मात्रा एवं पौध अंतरण: 20–25 किग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर की बुवाई के लिए प्रयाप्त रहता है। बुवाई कतर में 45 सेमी. की दुरी पर करनी चाहिए तथा पोधे से पोधे की दुरी 15 सेमी. होनी चाहिए। बुवाई मेड पर 3–4 सेमी की गहराई पर करनी चाहिए।

उर्वरक प्रबंधन: उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी की जाँच के आधार पर करना चाहिए। अगर मिट्टी की जाँच न कराई गयी हो तो 10–15 टन गोबर की खाद प्रति है. की दर से खेत में डालकर आखरी जुताई के समय अच्छी प्रकार मिट्टी में मिला देना चाहिए। सामान्य तोर पर 150–180 किग्रा. नाइट्रोजन, 60 किग्रा. फॉस्फोरस, 60 किग्रा. पोटाश तथा 25 किग्रा. जिंक प्रति है. के हिसाब से प्रयाप्त रहता है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा, फॉस्फोरस, पोटाश तथा जिंक की पूरी मात्रा को बुवाई के समय बीज से 4–5 सेमी. की गहराई पर डालना चाहिए। नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा को दो बराबर भागों में बाटकर पहला बुवाई के 20–25 दिन बाद तथा शेष मात्रा को बुवाई के 40–45 दिन बाद खेत में डालना चाहिए। जिंक की कमी के लक्षण दखाई देने पर 500 ग्राम जिंक सल्फेट और 2 किग्रा. यूरिया को 100 लीटर पानी में घोलकर (आवश्यकतानुसार इसी अनुपात में बनाकर) एक–एक सप्ताह बाद 2–3 बार लगातार छड़काव करें।

सिचाई: इस फसल में जल प्रबंधन का विशेष महत्व है। प्रथम सिचाई बुवाई के 20–25 दिन बाद तथा इसके बाद 25–30 दिन के अंतराल पर सिचाई करनी चाहिए। इस बात का विशेष ध्यान रहे की पानी मेड़ों के ऊपर तक नही जाना चाहिए तथा सामान्यतः पानी मेड़ों की 3/4 भाग तक ही पहुचें अन्यथा फसल को हानी हो सकती है। घुटनों की उचाई, सिल्क आने तथा भुटटों तोड़ते समय खेत में प्रयाप्त नमी होनी चाहिए क्योंकि ये फसल की सबसे संवेदनशील अवस्थाएं होती है। ठण्ड के मौसम में फसल को पाले से बचने के लिए खेत में नमी बनाये रखें। किसी भी समय खेत में जल भराव की स्थिति नही होनी चाहिए।

खरपतवार नियंतरण: खेत को खरपतवार रहित बनाने के लिए 2–3 नराई की आवश्यकता होती है, पहली बुवाई के एक माह बाद और दूसरी पहली नराई के 15–20 दिन के अंतराल पर करनी चाहिए। रासायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण करने के लिए एट्राजीन दवा को 0.5 किग्रा/है. की दर से बुवाई के 3–5 दिन के अंदर तथा उसके पश्चात 2–4, डी दवा को 1 किग्रा/है. की दर से 20–25 दिन बाद 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छड़काव करना चाहिए।

नर मंजरी को तोडना (डीटेसलिंग): बेबी कॉर्न की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए नर मंजरी को तोडना एक अनिवार्य प्रक्रिया है। पोधे के सबसे उपरी भाग के नर मंजरी निकलते ही उसे तुरंत हटा देना चाहिए। इसे पंक्तिबद्ध तरीके से करना चाहिए। मक्का में टेसल लगभग 45 वे से 55 वे दिन के बीच निकलते है तथा यह समय प्रजाति पर निर्भर करता है। इस क्रिया में पत्तों को नही हटाना चाहिए क्योंकि इससे प्रकाश संश्लेषण की क्रिया प्रभावित होती है।

प्रमुख कीट एवं प्रबंधन: फसल को कीटों से बचने के लिए बुवाई के समय फोरेट 10 जी. 40 किग्रा. प्रति है. की दर से प्रयोग करें। बेबी कॉर्न की फसल में तना मक्खी तथा गुलाबी तना भेदक एक गंभीर समस्या है। इसकी रोकथाम के लिए बुवाई के 20–25 दिन बाद 2.5 ग्राम कार्बारिल प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें।

प्रमुख रोग एवं प्रबंधन

मृदुल रोमिल आसिता: इस रोग की रोकथाम के लिए कोई भी सिस्टमिक फफुन्दनाशी जैसे मेटालैक्सिल, रोडोमिल 25 डब्लू. पी. का छिड़काव करना चाहिए।

शीथ ब्लाइट: बुवाई के 30–40 दिन बाद फसल पर 10 ग्राम राइजोलेक्स 50 डब्लू. पी. का छिडकाव करने से इस रोग की रोकथाम हो जाती है।

बेबी कॉर्न की तुड़ाई: जब सिल्क 2–3 सेमी निकल जाए उस समय कॉर्न्स को तोड़ना चाहिए। तथा कॉर्न्स को पत्ती सहित सुबह या शाम के समय तोडना चाहिए। तुड़ाई समय से करनी चाहिए अन्यथा कॉर्न देरी से तोड़ने पर कठोर हो जाती है जिससे इनकी बाजार कीमत घट जाती है। इसलिए 2–3 दिन के अंतराल पर तुड़ाई करते रहना चाहिए। इस प्रकार एक फसल से 7–8 तुड़ाई मिल जाती है।

तुड़ाई के बाद प्रबंधन: तुड़ाई के बाद छिलकों को सावधानीपूर्वक छावं वाले तथा हवादार स्थान पर अलग करना चाहिए जिससे कॉर्न को कोई नुकसान ना पहुचे। और इस बात का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है की कॉर्न का ढेर न लगायें।

बाजार में बेचने के लिए बेबी कॉर्न की छोटे छोटे थैलों में पैकिंग करना अच्छा रहता है अधिक समय तक संरक्षित रखने के लिए कांच की बोतल में पैकिंग सबसे अच्छी होती है जिसे केनिंग कहते हैं। इसके लिए 3 प्रतिशत नमक के घोल में 2 प्रतिशत चीनी तथा 0.4 प्रतिशत सिट्रिक एसिड मिलाकर स्टोर कर सकते हैं।

उपज: सही तरीके से उगाई गयी बेबी कॉर्न की फसल से छिलके सहित 55–110 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा बिना छिलके 11–20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त हो जाती है। इसके अलावा 250–400 क्विंटल हरा चारा भी मिल जाता है।

भारतीय भाषएँ नदियाँ और हिन्दी महानदी। हिन्दी देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाने वाली भाषा है। हमें इस भाषा को राष्ट्रभाषा के रुप में स्वीकार करना चाहिए। मैं दावे के साथ यह कह सकता हूँ कि हिन्दी के बिना हमारा काम नही चल सकता।

–रवीन्द्रनाथ टैगोर